

कानपुर जागरण

ता नहीं, सुरक्षा की राह दिखाता है अखबार

मुख और शहर के गणमान्य लोगों ने अखबार को बताया पूरी तरह से सुरक्षित



समाचार पत्रों की जाहज़ी बेहद सुरक्षित और अनुकूलित तरीके से होती है। देश और विदेश में जागरण की संवेदनशीलता का एक भी खसरा अखबार नहीं छोड़ता है। यह जिदनी का शिखर बन चुका है। शीघ्र ही जागरण की सुवर्ण श्रमिका रहती है।

डॉ. दीपक सिंह, कुलपति, कानपुर विश्वविद्यालय



समाचार पत्रों के जरिए केवल स्थानीय ही नहीं, देश विदेश, खेलकूद, मनोरंजन, अनुसंधान की खबरें पता चलती हैं। कोरोना वायरस के संक्रमण के समय में समाचार पत्रों की भूमिका वाकई अलग नहीं रही है। सही और सच्ची खबरों ने संक्रमण के डर को दूर किया।

डॉ. नरेंद्र मोहन, निदेशक राष्ट्रीय शर्करा संस्थान



निर्वाचित अखबार पढ़ता हूँ। वह सुसंवादी के प्रसारण का सही माध्यम है। दूर, बड़ और अन्य जगहों पर वस्तुओं की तरह से सुरक्षित है। बिना पालतू की आँखों पर ध्यान न दिया जाए। शरीर पहनने और बार बार हाथ धोने की आदत जारी रखें।

डॉ. गुनदीप सिंह, कुलपति, कानपुर विश्वविद्यालय



समाचार पत्रों की जाहज़ी बेहद सुरक्षित और अनुकूलित तरीके से होती है। देश और विदेश में जागरण की संवेदनशीलता का एक भी खसरा अखबार नहीं छोड़ता है। यह जिदनी का शिखर बन चुका है। शीघ्र ही जागरण की सुवर्ण श्रमिका रहती है।

डॉ. दीपक सिंह, कुलपति, कानपुर विश्वविद्यालय

गन्ने की खोई से निकलने वाले लिगनिन से बन सकते हैं कई रसायन

कानपुर। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में गुरुवार को आयोजित ऑनलाइन सत्र में इंटरनेशनल शुगर जनरल, लंदन, यूनाइटेड किंगडम के संपादक अरविंद ने कहा कि गन्ने की खोई से निकलने वाले लिगनिन से कई मूल्यवर्धित रसायन बनाए जा सकते हैं। लिगनिन से जैव ईंधन तैयार करने सहित पालीयूरोथोन, ब्यूटेन एवं टाल्विन जैसे रसायन प्राप्त किए जा सकते हैं। इस दिशा में और अधिक अनुसंधान एवं विकास किए जाने की आवश्यकता है। अरविंद 'लिगनिन और अन्य रसायन की प्राप्ति में लिमनोसेलुलोजिक फीडस्टॉक का प्रयोग' विषय पर बोल रहे थे। सत्र के प्रारंभिक चरण में संस्थान के निदेशक प्रोफेसर नरेंद्र मोहन ने कहा कि बगास खोई का प्रयोग केवल ईंधन के रूप में करने के बजाए मूल्यवर्धित उत्पादों की प्राप्ति के लिए भी किया जा सकता है। अरविंद ने बताया कि इस दिशा में स्वीडन में काफी कार्य किया गया है। लिगनिन से बायोडिग्रेडेबल कोटिंग भी तैयार किया जा सकता है।

बगास से बन रहे उत्पाद की दी गई जानकारी

कानपुर। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान की ओर से गुरुवार को एक अंतर्राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। वेबिनार में संस्थान के निदेशक के अलावा लंदन के इंटरनेशनल शुगर जर्नल के अरविंद चूड़ास्मा के अलावा यूगांडा, नाइजीरिया, तंजानिया, इटली के प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। संस्थान के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने बताया कि चीनी मिलों में बेकार जाने वाली गन्ने की खोई (बगास) का प्रयोग अभी तक सिर्फ ईंधन के रूप में किया जाता था। मगर अब इससे कई मूल्यवर्धित उत्पाद तैयार किए जा रहे हैं।

चीनी मिलों की बगास से बनाएं नए उत्पाद

कानपुर। चीनी मिलों से निकालने वाली बगास (खोई) का इस्तेमाल सिर्फ ईंधन के लिए नहीं बल्कि मूल्यवर्धित नए उत्पादों के लिए भी किया जा सकता है। इंटरनेशनल शुगर इंस्टीट्यूट के निदेशक प्रोफेसर नरेंद्र मोहन ने बताया कि एनएसआई ने इंटरनेशनल शुगर जर्नल, लंदन के एडिटर अरविंद चूड़ास्मा के साथ लिगनिन और अन्य रसायन की प्राप्ति से लिग्नोसेलुलोजिक फीड स्टॉक के प्रयोग पर ऑन लाइन सत्र का आयोजन किया। प्रोफेसर नरेंद्र मोहन ने बताया कि गन्ने की खोई में सेलुलोज, हेमीसेलुलोज और लिगनिन तीनों तत्व होते हैं। चूड़ास्मा ने बताया कि लिगनिन घर और शोध करने की जरूरत है। इससे बायो डिग्रेडेबिल कोटिंग तैयार की जा सकती है। इसके अलावा लिगनिन से पॉली यूरोथीन, स्प्रूटेन और टाल्वीनज लिगनिन से प्राप्त किए जा सकते हैं। अगर बगास का विभिन्न तकनीकों से इस्तेमाल किया जाए तो चीनी मिलों की आर्थिक स्थिति में स्थिरता आ सकती है। इस सत्र में नाइजीरिया, तंजानिया, इटली आदि देशों के प्रतिनिधियों ने भी ऑन लाइन हिस्सा लिया।

चीनी मिलों में गन्ने के रस से बनाया जाएगा बायो जल

कानपुर एक्सप्रेस। चीनी मिलों में गन्ने के रस से बायो जल का निर्माण अब आसानी से किया जा सकता है। गन्ने के रस से विभिन्न तरीकों से बायो जल को विभिन्न तकनीक से कोलेस्ट्रॉल कर बनाया जाये। बायो जल का उपयोग पेट जल के साथ ही मिश्रित व अन्य कार्यों में किया जा सकता है। इस तकनीक से चीनी मिलों को जल का एक नया विकल्प को उपलब्ध होगा और उनकी आर्थिक स्थिति भी सुधरेगी।

चीनी मिलों में गन्ने के रस से विभिन्न तरीकों से बायो जल को कोलेस्ट्रॉल कर बायो जल बनाये विभिन्न तकनीकों के विकास के लिए राष्ट्रीय शर्करा संस्थान ने कानपुर स्थित मैकाल्ड एंड वर्ल्ड ट्राइटेकनॉलॉजी से सम्बंधित अनुसंधान एमओयू किया है। सम्बंधित के तहत चीनी मिलों के कोलेस्ट्रॉल कर को उनके गुणवत्ता के अनुसार मिश्रित करने योग्य व अन्य कार्यों हेतु तैयार करने के लिए विभिन्न प्लांट उपकरणों को विकसित किया जाएगा।

गन्ने में लगभग 70 प्रतिशत जलवाष्प का होता है। इसके प्रत्यक्ष उपयोग के बाद चीनी मिलों को अपनी आवश्यकता पूरी करने के लिए 10-12 प्रतिशत जल प्राप्त किया जा सकता है। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान ने यह मिश्रित जल 4 वर्षों में 1000 से अधिक चीनी मिलों को उपलब्ध कराने का विचार है। क्योंकि चीनी मिलों के विभिन्न सेक्टर में जलवाष्प गुणवत्ता का दूषित जल निकाला है जिसका जलवाष्प-जल तकनीक का विकास आवश्यक होगा।

संस्थान के निदेशक डॉ. मोहन मोहन ने बताया कि सम्बंधित अनुसंधान संस्थान को प्रयोगशाला में पूरा किया जा चुका है। इसके माध्यम से चीनी उद्योग को बायो जल तैयार करने के हब के रूप में फिर सक्रिय हो सकता है। मैकाल्ड एंड वर्ल्ड ट्राइटेकनॉलॉजी कानपुर के निदेशक डॉ. निदेशक ने कहा कि संस्थान के प्रयोगशाला में गन्ने इस सम्बंधित के लिए कोलेस्ट्रॉल कर किया है।

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान अब गन्नाजल बनाएगा

कानपुर | त्रिष्ठ संवाददाता

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान अब गन्नाजल तैयार करेगा। मतलब चीनी मिलों में गन्ने से चीनी बनने के दौरान दूषितनाम पर बर्बाद हो रहे पानी को शोधित कर मिनरल वाटर तैयार किया जाएगा। इससे पानी की बर्बादी कम होगी और चीनी मिलों की आय का स्रोत बढ़ेगा। इस तकनीक व मिनरल वाटर को गन्नाजल नाम दिया गया है। निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन और यूवाई ट्राइटेकनॉलॉजी प्रा.लि. के निदेशक डॉ. सिधल के बीच

शुक्रवार को एक एमओयू हुआ। इसके तहत दोनों संस्थान मिलकर इस तकनीक को विकसित करेंगे। मानव संसाधन लागत, तकनीक के प्रोटोटाइप के विकास की लागत और संस्थान की रायल्टी का खर्च कंपनी उठाएगी। एनएसआई के वैज्ञानिक इसकी तकनीक विकसित करेंगे। प्रो. नरेंद्र मोहन ने कहा कि पानी का संकट बढ़ता जा रहा है। गन्ने में करीब 70 फीसदी हिस्सा पानी का होता है। साथ ही, चीनी मिलों में ताजे पानी की खपत बहुत अधिक होती है।

कानपुर। नेशनल शुगर इंस्टीट्यूट गन्ना पेराई के बाद निकलने वाले दूषित जल को पीने योग्य बनाने के लिए तकनीक तैयार कर ली है। इसके साथ ही चीनी मिल पीने के पानी का कारोबार भी कर सकती है। इस संबंध में इंस्टीट्यूट का शहर की एक निजी कंपनी के साथ समझौता हुआ है। समझौता पत्र पर शुक्रवार को दोनों पक्ष ने दस्तखत किए। एनएसआई के निदेशक प्रोफेसर नरेंद्र मोहन ने बताया कि शहर में बायो जल का हब विकसित किया जा सकता है। बताया कि चीनी मिलों से डेढ़ सौ लीटर प्रति टन गन्ना की दर दूषित जल निकलता है। विभिन्न सेक्शन से भी अलग-अलग तरह का दूषित जल निकलता है। इसे साफ करने की तैयारी है।

11

[illegible]

गन्ने के रस में मौजूद पानी बनेगा पीने योग्य

कानपुर : चीनी मिलें गन्ने के रस में मौजूद 70 फीसद पानी को पीने के अलावा, सिचाई और साफ सफाई के काम में प्रयोग करेगी। इसके लिए नई तकनीक विकसित की जाएगी। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान और एक निजी कंपनी के बीच शुक्रवार को इस तकनीक पर काम करने के लिए करार हुआ। निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने बताया कि चीनी मिलों में सबसे पहले गन्ने से रस निकलता है। उसे प्रसंस्करण के बाद सीरप और चीनी के क्रिस्टल तैयार होते हैं। प्रो. नरेंद्र मोहन के मुताबिक एनएसआई के साथ मेसर्स यूवाई ट्राइइनवायरो प्राइवेट लिमिटेड इस पानी को शोधित करने की तकनीक विकसित कर रही है। ज्ञात

NSI, UY Trienviro to develop tech to treat waste water

KANPUR (PNS): National Sugar Institute and UY Trienviro Pvt. Ltd signed a memorandum of understanding (MoU) on Friday for collaborative research work to develop techniques for treatment of sugar industry waste waters so as to convert them to good quality water. According the agreement, the company will bear the cost of manpower, expenditure on development of prototypes besides paying royalty to the institute. The MoU was signed by NSI Director Narendra Mohan, and UY Trienviro Pvt. Ltd. Director BK Singhal, Prof Mohan said the research already conducted by the institute indicated that the sugar factories could become a hub of bio-water in times to come and thus the collaborative work would be of immense utility not only for the sugar industry but for society as a whole.

He said in future, apart from sugar one would get potable water also from the sugar factories.

According to Prof Mohan, sugarcane contains about 70 per cent water and even after meeting all requirements of the sugar mills, 10-12 per cent of this water may be rendered surplus for other uses including converting it into potable water.

After conducting survey of more than 100 sugar factories in various sugar producing states over the last four years, the NSI reached the conclusion that with desired technological interventions, this water can be made available to society for its various needs. He said as the quality of waste and surplus water discharged from different sections of the sugar mill varies appreciably in terms of pH, BOD, COD, TDS and TSS etc., each may require a different treatment technology.

चीनी मिलों के सह उत्पादों से बढ़ेगी आय

कानपुर (एसएनबी)। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में शुक्रवार को बायो एनर्जी फॉर बायो इकोनाम ऑफ शुगर इंडस्ट्रीज थीम पर विश्व पर्यावरण दिवस का आयोजन किया गया। संस्थान निदेशक नरेद्र मोहन ने इस अवसर पर चीनी मिलों में वर्तमान उपलब्ध तकनीकों की सहायता से बगास, फिल्टर केक एवं शीरे का उपयोग बिजली, बायोगैस तथा इथेनॉल बनाने में करने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि डिस्टिलरियों से निकलने वाले उत्पवाह का प्रयोग भी बिजली बनाने में किया जा रहा है, जिसको आगे बढ़ाने की जरूरत है। संस्थान के प्रोफेसर स्वेन ने चीनी उद्योग को पर्यावरण संतुलन बनाने हेतु एक रोडमैप तैयार करने की सलाह दी।

गन्ने के सह उत्पाद से पैसे कमाएं

कानपुर। पर्यावरण दिवस पर नेशनल शुगर इंस्टीट्यूट में बायो एनर्जी फॉर बायो इकोनामी ऑफ शुगर इंडस्ट्रीज विषय पर कार्यक्रम हुआ। बताया गया कि चीनी मिल गन्ने के सह उत्पाद से बिजली और अन्य चीजें बनाएं। इससे पर्यावरण भी बचा रहेगा और आर्थिक स्थिति भी मजबूत होगी। चीनी मिल से मिलने वाले सह उत्पाद बगास, फिल्टर केक और शीरे का उपयोग बिजली, बायो गैस और इथेनॉल बनाने में किया जा सकता है। इंस्टीट्यूट के निदेशक प्रोफेसर नरेद्र मोहन और प्रोफेसर स्वेन ने सलाह दी कि पर्यावरण संतुलन के मद्देनजर चीनी उद्योग का एक रोड मैप तैयार किया जाए जिससे जल एवं वायु प्रदूषण को कम किया जा सके।

वेस्ट से ही तैयार करिए उत्पाद, सुधरेगा पर्यावरण

कानपुर। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में विश्व पर्यावरण दिवस पर बॉयो इनर्जी फॉर बॉयो इकोनॉमी ऑफ शुगर इंडस्ट्रीज पर एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। संस्थान के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने कार्यक्रम का शुभारंभ पौधरोपण से किया। कहा, चीनी मिलों से निकलने वाले सह उत्पाद, बगास, फिल्टर केक व शीरे का उपयोग बिजली, बॉयो गैस, बॉयो सीएनजी व इथेनॉल बनाने में करें।